

NCERT Solutions For Class 12 Hindi Aroh (Prose)

CH 11 - बाजार दर्शन

1. बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या क्या असर पड़ता है?

उत्तर: बाजार का जादू चढ़ने पर मनुष्य बाजार की आकर्षक वस्तुओं को खरीदने लगता है। जिनके मन खाली हैं तथा जिनके पास खरीदने की शक्ति अर्थात् परचेसिंग पावर है। ऐसे लोग बाजार की चकाचौंध का शिकार हो जाते हैं और बाजार की अनावश्यक वस्तुएँ खरीदकर अपने मन की शांति भंग करते हैं। परंतु जब बाजार का जादू उतर जाता है तो उसे पता चलता है कि जो वस्तु उसने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए खरीदी थी, वह तो उसके आराम में बाधा उत्पन्न कर रही है।

2. बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौनसा सशक्त पहलू उभर कर आता है? क्या आपकी नजर में उनका आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है?

उत्तर: भगत जी बाजार में चारों ओर सब कुछ देखते हुए चलते हैं लेकिन वह बाजार की ओर आकृष्ट नहीं होते बल्कि संतुष्ट मन से सब कुछ देखते हुए चलते हैं। उन्हें तो केवल जीरा और काला नमक ही खरीदना होता है। यहां उनके जीवन का सशक्त पहलू उभरकर सामने आता है। निश्चय से भगत जी का यह आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है। यदि मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार वस्तुओं की खरीद करता है तो इससे बाजार में महंगाई भी नहीं बढ़ेगी और लोगों में संतोष की भावना उत्पन्न होगी।

3. बाजारूपन से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर: बाजारूपन का अर्थ है- ओछापन। इसमें दिखावा अधिक होता है और आवश्यकता बहुत कम होती है। जिन लोगों में बाजारूपन होता है, वे बाजार को निरर्थक बना देते हैं; परंतु जो लोग आवश्यकता के अनुसार बाजार से वस्तु खरीदते हैं, वही बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। ऐसे लोगों के कारण ही केवल वही वस्तुएँ बेची जाती हैं जिनकी लोगों को आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में बाजार हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन बनता है। भगत जी जैसे लोग जानते हैं कि उन्हें बाजार से क्या खरीदना है। अतः ऐसे लोग ही बाजार को सार्थक बनाते हैं।

4. बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म, क्षेत्र नहीं देखता; बस देखता है सिर्फ उसकी क्रय शक्ति को। और इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर: यह कहना सही है कि बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता। बाजार यह नहीं पूछता कि आप किस जाति, धर्म से संबंधित हैं वह तो केवल ग्राहक को महत्व देता है। ग्राहक के पास पैसे होने



चाहिए, वह उसका स्वागत करता है। इस दृष्टि में बाजार निश्चय से सामाजिक समता की रचना करता है क्योंकि बाजार के समक्ष चाहे ब्राह्मण हो या निम्न जाति का व्यक्ति; मुसलमान हो या इसाई, सब बराबर है। वे ग्राहक के सिवाय कुछ नहीं है और इस दृष्टि से मैं पूर्णतया सहमत हूँ।

5. आप अपने तथा समाज से कुछ ऐसे प्रसंग का उल्लेख करें –

क. जब पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत हुआ।

ख. जब पैसे की शक्ति काम नहीं आई।

उत्तर:

(क) जब बड़ा से बड़ा अपराधी अपने पैसे की शक्ति के सहारे निर्दोष साबित कर दिया जाता है तब हमें पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत होता है।

(ख) गंभीर बीमारी के आगे पैसे की शक्ति भी काम नहीं आती है।

पाठ के आसपास

6. बाज़ार दर्शन पाठ में बाज़ार जाने या न जाने के संदर्भ में मन की कई स्थितियों का ज़िक्र आया है। आप इन स्थितियों से जुड़े अपने अनुभवों का वर्णन कीजिए।

1. मन खाली हो

2. मन खाली न हो

3. मन बंद हो

4. मन में नकार हो

उत्तर:

(1) मन खाली हो – जब मैं केवल यँही घूमने की दृष्टि से बाज़ार जाता हूँ तो न चाहते हुए भी कई सारी महंगी चीजें घर ले आता हूँ और बाद में पता चलता है कि इन वस्तुओं की वास्तविक कीमत तो बहुत कम है और मैं केवल उनके आकर्षण में फँसकर इन्हें खरीद लाया।

(2) मन खाली न हो – एक बार मुझे बाज़ार से एक लाल रंग की शर्ट खरीदनी थी तो मैं सीधे कपड़े की दुकान पर पहुँच गया, उस दुकान में अन्य कई तरह के शर्ट व पैंट मुझे आकर्षित कर रहे थे परन्तु मेरा विचार पक्का होने के कारण मैं सीधे शर्ट वाले काउंटर पर पहुँचा और अपनी मनपसंद शर्ट खरीदकर बाहर आ गया।

(3) मन बंद हो – कभी-कभी जब मन बड़ा उदास होता है, तब बाज़ार की रंग-बिरंगी वस्तुएँ भी मुझे आकर्षित नहीं करती हैं। मैं बिना कुछ लिए यँहीं घर चला आता हूँ।

(4) मन में नकार हो – एक बार मेरे पड़ोसी ने मुझे नकली वस्तुओं के बारे में कुछ इस तरह समझाया कि मेरे मन में वस्तुओं के प्रति एक प्रकार की नकारात्मकता आ गई। मुझे बाज़ार की सभी वस्तुएँ में कोई न कोई कमी दिखाई देने लगी। मुझे लगा जैसे सारी वस्तुएँ अपने मापदंडों पर खरी नहीं हैं।

7. बाज़ार दर्शन पाठ में किस प्रकार के ग्राहकों की बात हुई है? आप स्वयं को किस श्रेणी का ग्राहक मानते/मानती हैं?

उत्तर: बाज़ार दर्शन पाठ में कई प्रकार के ग्राहकों की चर्चा की गई है जो निम्नलिखित हैं – खाली मन और खाली जेब वाले ग्राहक, भरे मन और भरी जेब वाले ग्राहक, पर्चेजिंग पावर का प्रदर्शन करने वाले ग्राहक, बाजारुपन बढ़ाने वाले ग्राहक, अपव्ययी ग्राहक, भरे मन वाले ग्राहक, मितव्ययी और संयमी ग्राहक।

मैं अपने आप को भरे मन वाला ग्राहक समझता हूँ क्योंकि मैं आवश्यकता अनुसार ही बाज़ार में जाता हूँ और जो जरूरी वस्तुएँ हैं वही वस्तु खरीदता हूँ।

8. आप बाज़ार की भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति से अवश्य परिचित होंगे। मॉल की संस्कृति और सामान्य

बाज़ार और हाट की संस्कृति में आप क्या अंतर पाते हैं? पर्चेजिंग पावर आपको किस तरह के बाज़ार में नज़र आती है?

उत्तर:

मॉल की संस्कृति – मॉल की संस्कृति में हमें एक ही छत के नीचे तरह-तरह के सामान मिलते हैं यहाँ का आकर्षण ग्राहकों को सामान खरीदने को मजबूर कर देता है। इस प्रकार के बाजारों के ग्राहक उच्च और उच्चतम वर्ग से संबंधित होते हैं।

सामान्य बाज़ार – सामान्य बाज़ार में लोगों की आवश्यकतानुसार चीज़ें होती हैं। यहाँ का आकर्षण मॉल संस्कृति की तरह नहीं होता है। इस प्रकार के बाजारों के ग्राहक मध्यम वर्ग से संबंधित होते हैं।

हाट की संस्कृति – हाट की संस्कृति के बाज़ार एकदम सीधे और सरल होते हैं। इस प्रकार के बाजारों में निम्न और ग्रामीण परिवेश के ग्राहक होते हैं। इस प्रकार के बाजारों में दिखावा नहीं होता है।

पर्चेजिंग पावर हमें मॉल संस्कृति में ही दिखाई देता है क्योंकि एक तो उसके ग्राहक उच्च वर्ग से संबंधित होते हैं और मॉल संस्कृति में वस्तुओं को कुछ इस तरह के आकर्षण में पेश किया जाता है कि ग्राहक उसे खरीदने को मजबूर हो जाते हैं।

9. लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाज़ार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।



उत्तर: मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ। दुकानदार कभी-कभी ग्राहक की आवश्यकताओं का भरपूर शोषण करते हैं जैसे कभी-कभी जीवन-यापन उपयोगी वस्तुओं (चीनी, गैस, प्याज, टमाटर आदि) की कमी हो जाती है। उस समय दुकानदार मनचाहे दामों में इन चीजों की बिक्री करते हैं।

10. स्त्री माया न जोड़े यहाँ माया शब्द किस ओर संकेत कर रहा है? स्त्रियों द्वारा माया जोड़ना प्रकृति प्रदत्त नहीं, बल्कि परिस्थितिवश है। वे कौन-सी परिस्थितियाँ हैं जो स्त्री को माया जोड़ने के लिए विवश कर देती हैं?

उत्तर: यहाँ पर माया शब्द धन-संपत्ति की ओर संकेत करता है। आमतौर पर स्त्रियाँ माया जोड़ती देखी जाती हैं परन्तु उनका माया जोड़ने के पीछे अनेक कारण होते हैं जैसे – एक स्त्री के सामने घर-परिवार सुचारु रूप से चलाने की, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की, असमय आनेवाले संकट की, संतान के विवाह की, रिश्ते नातों को निभाने की जिम्मेदारियाँ आदि अनेक परिस्थितियाँ आती हैं जिनके कारण वे माया जोड़ती हैं।

आपसदारी

11. ज़रूरत-भर जीरा वहाँ से लिया कि फिर सारा चौक उनके लिए आसानी से नहीं के बराबर हो जाता है- भगत जी की इस संतुष्ट निस्पृहता की कबीर की इस सूक्ति से तुलना कीजिए
चाह गई चिंता गई मनुआ बेपरवाह
जाके कुछ न चाहिए सोइ
सहंसाह।

– कबीर

उत्तर: कबीर का यह दोहा भगत जी की संतुष्ट निस्पृहता पर पूर्णतया लागू होता है। कबीर का कहना था कि इच्छा समाप्त होने पर चिंता खत्म हो जाती है। शहंशाह वही होता है जिसे कुछ नहीं चाहिए। भगत जी भी ऐसे ही व्यक्ति हैं। इनकी जरूरतें भी सीमित हैं। वे बाजार के आकर्षण से दूर रहते हैं। अपनी ज़रूरत का पूरा होने पर वे संतुष्ट हो जाते हैं।

भाषा की बात

12. विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का प्रयोग भी अपना रूप बदलता रहता है कभी औपचारिक रूप में आती है तो कभी अनौपचारिक रूप में। पाठ में से दोनों प्रकार के तीन-तीन उदाहरण छाँटकर लिखिए।

उत्तर:

-औपचारिक रूप

1. पैसा पावर है।
2. बाज़ार में एक जादू है।
3. एक बार की बात कहता हूँ।

-अनौपचारिक रूप

1. बाज़ार है कि शैतान का जाल।
2. उस महिमा का मैं कायल हूँ।
3. पैसा उससे आगे होकर भीख माँगता है।

13. पाठ में अनेक वाक्य ऐसे हैं, जहाँ लेखक अपनी बात कहता है कुछ वाक्य ऐसे हैं जहाँ वह पाठक-वर्ग को संबोधित करता है। सीधे तौर पर पाठक को संबोधित करने वाले पाँच वाक्यों को छाँटिए और सोचिए कि ऐसे संबोधन पाठक से रचना पढ़वा लेने में मददगार होते हैं?

उत्तर:

- (1) पानी भीतर हो; लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है।
- (2) लू में जाना तो पानी पीकर जाना।
- (3) बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ, मुझे लूटो और लूटो।
- (4) परंतु पैसे की व्यंग शक्ति की सुनिए।
- (5) कहीं आप भूल न कर बैठिएगा।

14. नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए।

(क) पैसा पावर है।

(ख) पैसे की उस पर्चेज़िंग पावर के प्रयोग में ही पावर का रस है।

(ग) मित्र ने सामने मनीबैग फैला दिया।

(घ) पेशगी ऑर्डर कोई नहीं लेते।

ऊपर दिए इन वाक्यों की संरचना तो हिन्दी भाषा की है लेकिन वाक्यों में एकाध शब्द अंग्रेजी भाषा के आए हैं। इस तरह के प्रयोग को कोड मिक्सिंग कहते हैं। एक भाषा के शब्दों के साथ दूसरी भाषा के शब्दों का मेलजोल! अब तक आपने जो पाठ पढ़े उसमें से कोई पाँच उदाहरण चुनकर लिखिए। यह भी बताइए

कि आगत शब्दों की जगह उनके हिन्दी पर्यायों का ही प्रयोग किया जाए तो भाषा पर संप्रेषणीयता क्या प्रभाव पड़ता है।

उत्तर:

- (1) हमें हफ्ते में चॉकलेट खरीदने की छूट थी।
- (2) बाज़ार है या शैतान का जाल।
- (3) पर्चेजिंग पावर के अनुपात में आया है।
- (4) बचपन के कुछ फ्रॉक तो मुझे अब तक याद हैं।
- (5) वहाँ के लोग उम्दा खाने के शौकीन हैं।

किसी भी भाषा को समृद्ध बनाने के लिए आगत शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इस पर यदि रोक लगा दी जाए तो भाषा की संप्रेषणीयता कमजोर और कठिन हो जाएगी। जैसे उदहारण स्वरूप यदि ट्रेन को हम हिन्दी के पर्याय के रूप में लौह-पथ-गामिनी कहेंगे तो भाषा में दुरुहता आ जाएगी अतः कोड मिक्सिंग के प्रयोग से भाषा में सहजता और विचारों के आदान-प्रदान में सुविधा रहती है।

15. नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित अंश पर ध्यान देते हुए उन्हें पढ़िए –

क) निर्बल ही धन की ओर झुकता है।

ख) लोग संयमी भी होते हैं।

ग) सभी कुछ तो लेने को जी होता था।

ऊपर दिए गए वाक्यों के रेखांकित अंश 'ही', 'भी', 'तो' निपात हैं जो अर्थ पर बल देने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। वाक्य में इनके होने-न-होने और स्थान क्रम बदल देने से वाक्य के अर्थ पर प्रभाव पड़ता है, जैसे – मुझे भी किताब चाहिए। (मुझे महत्वपूर्ण है।)

मुझे किताब भी चाहिए। (किताब महत्वपूर्ण है।)

आप निपात (ही, भी, तो) का प्रयोग करते हुए तीन-तीन वाक्य बनाइए। साथ ही ऐसे दो वाक्यों का भी निर्माण कीजिए जिसमें ये तीनों निपात एक साथ आते हों।

उत्तर:

-ही

1. उन्हें भी आज ही आना है।
2. मैं जल्दी ही सामान मँगवा लूँगा।
3. तुम से ही काम है मुझे।

-भी

1. आपके साथ मैं भी जाऊंगा।
2. बच्चे अब भी नहीं समझ पाए।
3. तुम अभी भी रो रहे हो।

-तो

1. तुम लिख नहीं पाते परन्तु बोल तो लेते हो।
2. खाना तो है लेकिन भूख नहीं लग रही है।
3. मेरे पास रुपये थे तो लेकिन घर पर थे।

तीनों निपातों का प्रयोग –

1. तुम घर पर ही ठहर जाओ क्योंकि घर में भी कोई तो होना चाहिए।
2. मैं तो निकलने ही वाला था परन्तु मुझे खाना भी खाना था।